1st Convocation

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

प्रथम दीक्षांत-समारोह

बुधवार, 21 दिसम्बर, 2016

क्षण - प्रतिक्षण कार्यक्रम

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

कोनी-बिरकोना मार्ग, बिलासपुर (छ.ग.) 495009

फोन : 07752-210312, 210315

फैक्स - 07752-213073

Website - pssou.ac.in

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

प्रथम दीक्षांत-समारोह

21 दिसंबर, 2016

क्षण-प्रतिक्षण कार्यक्रम

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय, छत्तीसगढ़, बिलासपुर
कोनी-बिरकोना मार्ग, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

01. कुलसचिव द्वारा कुलपति की आज्ञा से दीक्षांत-समारोह के शुभारंभ की घोषणा।

(अ)

कुलसचिव :

मैं, डॉ. राजकुमार सचदेव, कुलसचिव पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय, छत्तीसगढ़, बिलासपुर माननीय कुलपति महोदय से अनुरोध करता हूँ कि मुझे विश्वविद्यालय के प्रथम दीक्षांत-समारोह के शुभारंभ की घोषणा करने की अनुमति प्रदान करें।

(ब)

कुलपति :

अनुमति है।

(स)

कुलसचिव :

मैं, डॉ. राजकुमार सचदेव, कुलसचिव पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय, छत्तीसगढ़, बिलासपुर माननीय कुलपति महोदय की अनुमति से इस विश्वविद्यालय के प्रथम दीक्षांत-समारोह के शुभारंभ की घोषणा करता हूँ।

02. कुलपति द्वारा स्नातकों को अनुशासन दिया जाना।

अनुशासन

कुलपति :

मैं तुम्हें इस प्रकार उपदेश देता हूँ :

सत्य बोलना।

अपने कर्तव्य का पालन करना।

स्वाध्याय करते रहना।

उपाधि धारक :

प्रतिज्ञा करता हूँ ।

कुलपति :

सत्य की अवहेलना न करना।

अपने कर्तव्यों की अवहेलना न करना।

समाज कल्याण की अवहेलना न करना।

अपनी उन्नति की अवहेलना न करना।

ज्ञान की प्राप्ति और प्रसार की अवहेलना न करना

उपाधि धारक :

प्रतिज्ञा करता हूँ।

कुलपति :

अपनी माता और मातृभूमि को देवी मानना।

अपने पिता को देवता मानना।

अपने अध्यापक को देवता मानना।

अतिथि को देवता मानना।

जो अनिन्दित कर्म हैं उनका आचरण करना औरों, का नहीं।

उपाधि धारक :

प्रतिज्ञा करता हूँ।

कुलपति :

यही शिक्षा है, यही अनुशासन है।

यही शिक्षा का सिद्धांत है।

यही आदेश है।

तुम इसी प्रकार आचरण करना।

अवश्य ही तुम इसी प्रकार से आचरण करना।

तुम्हारा मार्ग कल्याणमय हो।

03. मंच संचालक द्वारा मानद उपाधि के अंतर्गत डी.लिट् की उपाधि देने के लिये डॉ. बीना सिंह, सदस्य-कार्यपरिषद् को प्रस्तुतिकरण हेतु आमंत्रित किया जायेगा।

डी.लिट् मानद उपाधि

(अ)

माननीय कुलपति महोदय,

मैं, डॉ. बीना सिंह, अध्यक्ष शिक्षा विभाग तथा सदस्य, विद्या परिषद् पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर आप के समक्ष पद्म श्री प्रोफ़ेसर जगमोहन सिंह राजपूत जी को प्रस्तुत करती हूँ। प्रोफेसर राजपूत जी स्कूल शिक्षा, अध्यापक शिक्षा एवं संस्थागत प्रबंधन के पुनर्निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान के लिए जाने जाते हैं। आपने सन् 1977-88 तक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल में प्राचार्य के पद पर अपनी सेवाएँ दी, तत्पश्चात् 1988-94 तक मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार में संयुक्त सलाहकार (शिक्षा) के रुप में कार्य किया। आपने 1994 से राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् के संस्थापक अध्यक्ष के रुप में कार्य किया। सन् 1999 से आप राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली के निदेशक के रुप में कार्य करते हुए 2004 में सेवानिवृत्त हुए।

प्रोफ़ेसर राजपूत जी के द्वारा हिन्दी एवं अँग्रेज़ी, दोनों माध्यमों में अनेक पुस्तकें एवं लेख लिखे गये हैं, जिसमें मुख्य पुस्तके हैं - **Encyclopedia of Indian Education, Contemporary Concern in Education, Universalization of Elementary Education: Role of Teacher Education,** एवं **Teacher Education in India.** आपकी पुस्तक ''सात सामाजिक अपराध'' का विमोचन वर्ष 2012 में भारत के माननीय उपराष्ट्रपति द्वारा किया गया। आपने अपने लेखों एवं प्रकाशनों में ''संस्कृति में अन्यों की स्वीकार्यता'' तथा ''शिक्षा के माध्यम से मूल्यों के पुनरुत्थान'' के लिए पुरज़ोर वकालत की है।

प्रोफ़ेसर राजपूत जी तीन दशकों तक यूनेस्को से जुड़े रहे। उनके विशिष्टि योगदान के लिए यूनेस्को द्वारा इन्हें वर्ष 2004 में ''जॉन एमोस कॉमेनियस'' (**Jan Amos Comenius**) पदक प्रदान किया गया। अपने जीवन काल में शिक्षा के क्षेत्र में योगदान के लिए मध्यप्रदेश शासन द्वारा वर्ष 2010 मे आपको ''महर्षि वेद व्यास'' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। आपको वर्ष 2015 में साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए भारत के माननीय राष्ट्रपति द्वारा ''पद्मश्री'' से अंलकृत किया गया। वर्तमान में प्रोफेसर राजपूत जी नयी राष्ट्रीय शिक्षा-नीति निर्माण में सक्रिय रूप से संलग्न हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में इनके अभूतपूर्व योगदान को दृष्टिगत रखते हुए माननीय कुलपति महोदय से मेरा निवेदन है कि प्रोफ़ेसर राजपूत जी को पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ, बिलासपुर की डी.लिट् की मानद उपाधि प्रदान की जाये।

(ब)

कुलपति :

इस विश्वविद्यालय के कुलपति के अधिकार से हम आज पद्मश्री प्रोफ़ेसर जगमोहन सिंह राजपूत जी को पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर की डी.लिट् की मानद उपाधि प्रदान करते हैं, और अपेक्षा करते हैं कि ये अपने आचार एवं व्यवहार से इस उपाधि के गौरव की रक्षा करेंगे।

4. मंच संचालक द्वारा मानद उपाधि के अंतर्गत पी-एच.डी की उपाधि देने के लिये डॉ. अनिता सिंह, सदस्य विद्यापरिषद् एवं क्षेत्रीय संचालक, को प्रस्तुतिकरण हेतु आमंत्रित किया जायेगा।

पी-एच.डी. मानद उपाधि

(अ)

माननीय कुलपति महोदय,

मैं डॉ. अनिता सिंह, क्षेत्रीय निदेशक एवं सदस्य, विद्या परिषद्, पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर आपके समक्ष दामोदर गणेश बापट जी को प्रस्तुत करती हूँ, जिन्होंने अपना समग्र जीवन कुष्ठरोग के खिलाफ संघर्ष तथा कुष्ठ रोगियों की सेवा कर समाज सेवा क्षेत्र में अपूर्व मिसाल समाज के समक्ष प्रस्तुत की है। श्री बापट जी ने वर्ष 1971 में वनवासी कल्याण आश्रम, जशपुर से समाज सेवा के क्षेत्र में प्रवेश कर 1974 में वनवासी सेवा क्षेत्र में कुष्ठ रोगियों की सेवा हेतु कदम बढ़ाए। सन् 1975 में इन्हें भारतीय कुष्ठ निवारक संघ, चांपा के सचिव पद का दायित्व दिया गया। श्री बापट जी ने अपनी कर्मठता, संगठन क्षमता और कुशल नेतृत्व के बल पर संस्था के लिए 73 एकड़ भूमि एवं भवन अर्जित किया, इसके साथ ही कार्यकर्ताओं की संख्या में भी अभिवृद्धि की। संस्था औद्योगिक विकास बैंक की मदद से कुष्ठ पीड़ितों को कृषि के अतिरिक्त लघु कुटीर उद्योग हेतु प्रशिक्षण एवं व्यवसाय प्रारंभ कराकर स्वावलंबन की ओर ले गए। कुष्ठ रोगियों एवं अन्य कार्यकर्ताओं की सहायता से 73 एकड़ अन-उपजाऊ जमीन को उपजाऊ भूमि में परिवर्तन किया, जहाँ से संस्था को खाद्यान्न की आपूर्ति हो रही है। आपने लघु कुटीर उद्योगों की स्थापना कर दरी बुनाई, चाक बनाना, रस्सी बनाना, सिलाई तथा वेल्डिंग आदि के माध्यम से अर्थोपार्जन की भी व्यवस्था की। जिससे रोगियों का पुनर्वास सम्भव हो रहा है। ऐसे सेवाभावी-कर्मयोगी को वर्ष 1995 के ''विवेकानंद सेवा पुरस्कार'' से सम्मानित किया गया। वर्ष 2013 में स्व. जीवन लाल साव स्मृति समिति द्वारा श्री बापट जी को सम्मानित किया गया। वर्ष 2007 में ''स्व. गोविन्द सारंग स्मृति'' राष्ट्र सेवाव्रती सम्मान से श्री बापट जी सम्मानित किए गए; इन्हें वर्ष 2006 में छत्तीसगढ़ राज्य अलंकरण तथा श्री अहिल्योत्सव समिति द्वारा सम्मान, तथा वर्ष 2010 में भारतीय शिक्षण मण्डल एवं संस्कार भारती, कानपुर द्वारा इन्हें सेवारत्न सम्मान दिया गया।

कुष्ठ से ग्रसित रोगियों के लिए श्रेष्ठ जीवन जीने की परिस्थिति का निर्माण करने वाले कर्मयोगी श्री दामोदर गणेश बापट के लिए मेरा निवेदन है कि इन्हें पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर की पी-एच.डी. की मानद उपाधि प्रदान की जाय।

(ब)

कुलपति :

इस विश्वविद्यालय के कुलपति के अधिकार से हम श्री दामोदर गणेश बापट जी को आज पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर की पी-एच.डी. की मानद उपाधि प्रदान करते हैं, और अपेक्षा करते हैं कि ये अपने आचार एवं व्यवहार से इस उपाधि के गौरव की रक्षा करेंगे

पी-एच.डी. मानद उपाधि

(अ)

माननीय कुलपति महोदय,

मैं डॉ. अनिता सिंह, क्षेत्रीय निदेशक एवं सदस्य, विद्या परिषद्, पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर आपके समक्ष सुश्री बुधरी ताती जी को प्रस्तुत करती हूँ, जिन्होंने प्रदेश के सुदूर आदिवासी अंचल, गीदम, दंतेवाड़ा के हीरानार गाँव से महिला उत्थान एवं जागरण के लिए सामाजिक कार्य प्रारंभ किया। सुश्री ताती जी ने 18 वर्ष की आयु में ही समाज के लिए राष्ट्रीय कार्य का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त कर बस्तर अंचल के भानपुरी में वर्ष 1985 में 12 छात्राओं को लेकर छात्रावास प्रारंभ किया। इन्होंने वर्ष 1986 में दक्षिण बस्तर के बारसूर को केन्द्र बनाकर महिला जागरण एवं सशक्तिकरण का श्री गणेश किया। 1986 में अबूझमाड़ व दक्षिण बस्तर, के 400 गाँवों में अपने सहयोगियों के साथ आदिवासी महिलाओं में सामाजिक चेतना एवं स्वाभिमान भाव जागृत करने पदयात्रा की।

आपने वर्ष 1987 में बारसूर में महिला प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना की, जिसमें अब तक 550 महिलाएँ प्रशिक्षित हो चुकी हैं। इन वनवासी महिलाओं को सिलाई, कढ़ाई, बुनाई, गृह तथा कुटीर उद्योग में प्रशिक्षित किया गया है। आपने प्रशिक्षित पूर्ण-कालिक महिला कार्यकर्ताओं के माध्यम से 40-50 गाँवों में प्रशिक्षण उपकेन्द्रों की स्थापना की जहाँ बाल संस्कार-केन्द्र, सत्संग-केन्द्र, स्वास्थ्य-केन्द्र, शिक्षा-केन्द्र, महिला समिति एवं कल्याण वाहिनी जैसे प्रकल्पों का संचालन हो रहा है। सन् 1990 मे बारसूर में कन्या छात्रावास का शुभारंभ भी किया गया। सुश्री ताती जी हीरानार में स्थापित माँ शंखिनी महिला उत्थान-केन्द्र के माध्यम सें विगत 9 वर्षो से नशामुक्ति, नशापान से दूर रहने की शिक्षा, संस्कार एवं स्वास्थ्य जागरण द्वारा आदिवासी महिला समाज के उत्थान के लिए कार्यरत् हैं।

सुश्री ताती जी को नागपुर में नवम्बर 1998 में भारतीय स्त्री-शक्ति पुरस्कार; जनवरी 2001 में नातू फाउण्डेशन, पुणे द्वारा सम्मान; पिण्डवाड़ा, राजस्थान में जनजाति समाज की ओर से सम्मान, सेवा प्रकल्प संस्थान, आगरा द्वारा नागरिक सम्मान, सितम्बर 2006 में सामाजिक समरसता, महिला सम्मेलन, जयपुर द्वारा सम्मान, नवम्बर 2007 में महिला उत्थान के लिए छत्तीसगढ़ शासन द्वारा मिनी माता सम्मान, तथा जनवरी 2008 को श्री श्री रविशंकर धाम, बैंगलोर में जनजातीय महिला प्रतिनिधि के रूप में सम्मान प्राप्त हुआ है।

इनके द्वारा आदिवासी महिला समाज के उत्थान में अभूतपूर्व योगदान के लिए मेरा निवेदन है कि सुश्री बुधरी ताती जी को पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर की पी-एच. डी. की मानद उपाधि प्रदान की जाए।

(ब)

कुलपति :

इस विश्वविद्यालय के कुलपति के अधिकार से हम सुश्री बुधरी ताती जी को आज इन्हें पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ, बिलासपुर की पी-एच.डी. की मानद उपाधि प्रदान करते हैं, और अपेक्षा करते हैं कि ये अपने आचार एवं व्यवहार से इस उपाधि के गौरव की रक्षा करेंगी।

05. स्नातक स्नातकोत्तर डिप्लोमा एवं पत्रोपाधि परीक्षाएं -

(अ)

माननीय कुलपति महोदय,

मैं डॉ. राजकुमार सचदेव, कुलसचिव पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर आपके समक्ष स्नातक, स्नातकोत्तर, डिप्लोमा एवं पत्रोपाधि उपाधियों के लिए सत्र 2015-16 में जो छात्र विधिवत परीक्षित होकर उसके योग्य प्रमाणित किए गए हैं, मेरा निवेदन है कि उनकी अनुपस्थिति में उन्हें उपाधियाँ प्रदान करने की अनुमति दी जाए। इन कक्षाओं में उपाधि प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की कुल संख्या 8756 है।

क्र.	कक्षा / विषय का नाम	उपाधि
1.	बी.ए.	1445
2.	बी.एस-सी.	899
3.	बी.कॉम	24
4.	एम.ए. सभी विषय	1728
5.	एम.एस-सी.	522
6.	पी.जी.डी.सी.ए.	485
7.	डी.सी.ए.	463
8.	बी.लिब् एण्ड आई.एस-सी.	926
9.	योग विज्ञान	374
10.	छत्तीसगढ़ी भाषा एवं संस्कृति	88
11.	शिक्षा में डिप्लोमा	1802
	कुल	**8756**

(ब)

कुलपति :

इस विश्वविद्यालय के कुलपति के अधिकार से हम आदेश देते हैं कि इन्हें स्नातक एवं स्नातकोत्तर की उपाधियाँ प्रदान की जाएँ।

6. कुलसचिव द्वारा स्वर्ण-पदक हेतु प्रस्तुतीकरण

(अ)

माननीय कुलपति महोदय,

मैं, डॉ. राजकुमार सचदेव, कुलसचिव, पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर आपके समक्ष उन छात्र / छात्राओं को एक के बाद एक प्रस्तुत करता हूँ, जिन्होंने विश्वविद्यालय की 2015-16 की विभिन्न परीक्षाओं में प्रथम प्रयास में उच्चतम अंक प्राप्त कर प्रावीण्य-सूची में प्रथम अंक प्राप्त किये हैं। मेरा निवेदन है, कि प्रावीण्य-सूची में प्रथम स्थान प्राप्तकर्ताओं को पात्रता अनुसार स्वर्ण-पदक प्रदान किया जाए।

(ब)

कुलपति :

पात्रता अनुसार इन्हें स्वर्ण-पदक तथा प्राविण्य प्रमाण-पत्र प्रदान किया जाए।

(स)

कुलसचिव :

माननीय कुलपति जी, मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि महोदय, विश्वविद्यालय के स्वर्ण-पदक एवं दानदाताओं द्वारा प्रदत्त स्वर्ण-पदक के नाम इस प्रकार हैं -

क्र.	दानदाताओं के नाम	विषय
1.	स्व. श्री जगदीश कुमार अग्रवाल स्मृति स्वर्ण-पदक	बी.एड.
2.	स्व. श्री अनिरुद्ध कुमार दानी स्मृति स्वर्ण-पदक	बी.ए.
3.	स्व. श्री डी.पी.शुक्ला स्मृति स्वर्ण-पदक	एम.ए. राजनीति शास्त्र
4.	स्व. श्रीमती महेश्वरी देवी त्रिपाठी स्मृति स्वर्ण-पदक समस्त छात्राओं में सर्वाधिक अंक	वि.वि. के समस्त विषयों की
5.	स्व. श्रीमती किशोरी देवी एवं स्व.श्री मुरलीधर पटैरिया स्मृति स्वर्ण-पदक	बी.कॉम.
6.	स्व. श्री श्रीराम शर्मा आचार्य, संस्थापक गायत्री परिवार हरिद्वार स्मृति स्वर्ण-पदक	एम.ए. संस्कृत
7.	स्व. डॉ.मनोहर राय स्मृति स्वर्ण-पदक	एम.एस-सी गणित
8.	स्व. श्री लखीराम अग्रवाल स्मृति स्वर्ण-पदक	एम.ए. राजनीति शास्त्र
9.	स्व. श्रीमती मरवण देवी अग्रवाल स्मृति स्वर्ण-पदक	एम.ए. संस्कृत
10.	श्री राम ज्वेलर्स स्वर्ण-पदक	पी.जी.डी.सी.ए.

इन दोनों प्रकार के स्वर्ण-पदकों से अलंकृत किये जाने वाले छात्र / छात्राओं को स्वर्ण-पदक एवं उपाधि प्रदान करने हेतु मैं प्रस्तुत कर रहा हूँ -

क्र.	छात्र / छात्रा का नाम		पदक की शर्तें	पदक का नाम
1.	श्रीमती नेहा मित्रा (4)	1	एम.ए. संस्कृत में सर्वाधिक अंक	पण्डित सुन्दरलाल शर्मा विश्वविद्यालय स्वर्ण-पदक
		2	एम.ए. संस्कृत में सर्वाधिक अंक	पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य स्मृति स्वर्ण-पदक
		3	एम.ए. संस्कृत में सर्वाधिक अंक	स्व.श्रीमती मरवणदेवी अग्रवाल स्मृति स्वर्ण-पदक
		4	2016 की परीक्षा में वि.वि. के सभी विषयों की समस्त छात्राओं में सर्वाधिक अंक	स्व.श्रीमती महेश्वरी देवी त्रिपाठी स्मृति स्वर्ण-पदक
2	एस.श्रीनिवास राव (2)	1	एम.एस-सी.गणित में सर्वाधिक अंक	पण्डित सुन्दरलाल शर्मा विश्वविद्यालय स्वर्ण-पदक
		2	एम.एस-सी.गणित में सर्वाधिक अंक	स्व. डॉ. मनोहर राय स्मृति स्वर्ण-पदक
3	कुंज बिहारी राजपूत (2)	1	बी.ए. में सर्वाधिक अंक	पण्डित सुन्दरलाल शर्मा विश्वविद्यालय स्वर्ण-पदक
		2	बी.ए. में सर्वाधिक अंक	स्व.श्री अनिरुद्ध कुमार दानी स्मृति स्वर्ण-पदक
4	अमिता जैन (2)	1	बी.कॉम अंतिम में सर्वाधिक अंक	पण्डित सुन्दरलाल शर्मा विश्वविद्यालय स्वर्ण-पदक
		2	बी.कॉम अंतिम में सर्वाधिक अंक	स्व. श्रीमती किशोरी देवी एवं स्व. श्री मुरलीधर पटैरिया स्मृति स्वर्ण-पदक

5	चेतना देवांगन (1)	1	एम.ए. हिन्दी में सर्वाधिक अंक	पण्डित सुन्दरलाल शर्मा विश्वविद्यालय स्वर्ण-पदक
6	रीठा साहू (1)	1	एम.ए. अँग्रेज़ी में सर्वाधिक अंक	पण्डित सुन्दरलाल शर्मा विश्वविद्यालय स्वर्ण-पदक
7.	भवरंजन सिकदार (1)	1	एम.ए. अर्थशास्त्र में सर्वाधिक अंक	पण्डित सुन्दरलाल शर्मा विश्वविद्यालय स्वर्ण-पदक
8.	हेमलता बैस (1)	1	एम.ए. इतिहास में सर्वाधिक अंक	पण्डित सुन्दरलाल शर्मा विश्वविद्यालय स्वर्ण-पदक
9.	सुधा प्रधान (1)	1	एम.ए.समाज शास्त्र में सर्वाधिक अंक	पण्डित सुन्दरलाल शर्मा विश्वविद्यालय स्वर्ण-पदक
10	पार्वती पटेल (1)	1	बी.एस-सी. में सर्वाधिक अंक	पण्डित सुन्दरलाल शर्मा विश्वविद्यालय स्वर्ण-पदक
11	कु. कामिनी साहू (1)	1	बी.लिब् में सर्वाधिक अंक	पण्डित सुन्दरलाल शर्मा विश्वविद्यालय स्वर्ण-पदक
12	येनू (1)	1	पी.जी.डी.सी.ए. में सर्वाधिक अंक	श्रीराम ज्वेलर्स बिलासपुर स्वर्ण-पदक

7. सत्र 2015-16 की विभिन्न परीक्षाओं में प्रथम प्रयास में उच्चतर अंक प्राप्त कर प्राविण्य-सूची में दूसरा स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों के नाम हैं -

कुलसचिव :

मैं, डॉ. राजकुमार सचदेव, कुलसचिव, पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर आपके समक्ष उन छात्र / छात्राओं को एक के बाद एक प्रस्तुत करता हूँ, जिन्होंने विश्वविद्यालय की 2015-16 की विभिन्न परीक्षाओं में प्रथम प्रयास में उच्चतर अंक प्राप्त कर प्राविण्य-सूची में द्वितीय स्थान प्राप्त किये हैं। माननीय अतिथियों एवं माननीय कुलपति जी से निवेदन है कि इन्हें उपाधि प्रदान करें।

क्र.	छात्र / छात्रा का नाम	विषय
1.	श्रीमती वीना कुमारी	बी.ए.
2.	श्रीमती सुनीता देवांगन	बी.एस-सी
3.	दिलीप कुमार	बी.कॉम.
4.	श्रीमती रुचि अग्रवाल	एम.ए. हिन्दी
5.	कु. स्मिता नाग	एम.ए. अँग्रेज़ी
6.	सरस्वती राठिया	एम.ए. संस्कृत
7.	पुष्पा हिरवानी	एम.ए. इतिहास
8.	निर्मला बुनकर	एम.ए. समाजशास्त्र
9.	मो.मुस्ताक अली	एम.एस-सी गणित
10.	लक्ष्मी नारायण	बी.लिब् एण्ड आई.एस-सी

8. सत्र 2015-16 की विभिन्न परीक्षाओं में प्रथम प्रयास में उच्चतर अंक प्राप्त कर प्राविण्य-सूची में तीसरा स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों के नाम हैं -

आपके समक्ष उन छात्र छात्राओं को एक के बाद एक प्रस्तुत करता हूँ, जिन्होंने विश्वविद्यालय की 2015-16 की विभिन्न परीक्षाओं में प्रथम प्रयास में उच्चतर अंक प्राप्त कर प्राविण्य-सूची में तृतीय स्थान प्राप्त किये हैं। माननीय अतिथियों एवं माननीय कुलपति जी से निवेदन है कि इन्हें उपाधि प्रदान करें।

क्र.	छात्र / छात्रा का नाम	विषय
1.	हर्ष मथरानी	बी.ए.
2.	हरिशंकर साहू	बी.एस-सी
3.	जितेंद्र कुमार	बी.कॉम.
4.	मुकेश कुमार	एम.ए. हिन्दी
5.	स्वीटी मलिक	एम.ए. अँग्रेज़ी
6.	पिताम्बर सिंह	एम.ए. संस्कृत
7.	सुनीता जॉन	एम.ए. इतिहास
8.	चेतन सिंह	एम.ए. समाजशास्त्र
9.	रजनी पटेल	एम.एस-सी गणित
10.	धरमानंद गोजे	बी.लिब् एण्ड आई.एस-सी

9. कुलसचिव द्वारा कुलपति महोदय जी को विश्वविद्यालय का प्रतिवेदन प्रस्तुत करने तथा अध्यक्षीय भाषण हेतु आमंत्रित करना।

कुलसचिव :

मैं, डॉ. राजकुमार सचदेव, कुलसचिव, पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर दीक्षांत-समारोह के अध्यक्ष माननीय कुलपति महोदय जी को विश्वविद्यालय प्रतिवेदन प्रस्तुत करने तथा अध्यक्षीय भाषण हेतु आमंत्रित करता हूँ।

माननीय कुलपति महोदय जी का
विश्वविद्यालय प्रतिवेदन प्रस्तुतिकरण एवं अध्यक्षीय भाषण

10. कुलसचिव द्वारा विशिष्ट अतिथि पद्मश्री डॉ.अरुण त्रयम्बक दाबके जी को सम्बोधन हेतु आमंत्रित करना।

कुलसचिव :

मैं, डॉ. राजकुमार सचदेव, कुलसचिव, पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर दीक्षांत-समारोह के विशिष्ठ अतिथि माननीय पद्मश्री डॉ.अरुण त्रयंबक दाबके जी को सम्बोधन हेतु आमंत्रित करता हूँ।

माननीय पद्मश्री डॉ.अरुण त्रयंबक दाबके जी का सम्बोधन

11. कुलसचिव द्वारा मुख्य अतिथि जी को दीक्षांत-उद्‌बोधन हेतु आमंत्रित करना -

कुलसचिव :

मैं, डॉ. राजकुमार सचदेव, कुलसचिव, पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर इस दीक्षांत समारोह के मुख्य अतिथि माननीय पद्‌मश्री प्रोफ़ेसर जगमोहन सिंह राजपूत जी को दीक्षांत-उद्‌बोधन हेतु आमंत्रित करता हूँ।

मुख्य अतिथि माननीय प्रोफ़ेसर जगमोहन सिंह राजपूत जी जी का सम्बोधन

12. कुलसचिव द्वारा कुलपति से माननीय मुख्य अतिथि एवं विशिष्ठ अतिथि को स्मृति-चिन्ह भेंट करने हेतु निवेदन

कुलसचिव :

मैं, डॉ. राजकुमार सचदेव, कुलसचिव, पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर कुलपति महोदय से अनुरोध करता हूँ कि कृपया माननीय अतिथियों को स्मृति-चिह्न भेंट करें।

कुलपति जी द्वारा माननीय मुख्य अतिथि एवं
माननीय विशिष्ट अतिथि को स्मृति-चिह्न भेंट करना

13. कुलसचिव द्वारा धन्यवाद ज्ञापन एवं कुलपति जी से दीक्षांत-समारोह समापन की घोषणा की अनुमति प्राप्त करना

(अ)

कुलसचिव :

समारोह के मुख्य अतिथि पद्मश्री प्रोफ़ेसर जगमोहन सिंह राजपूत जी की गरिमामय उपस्थिति एवं दीक्षांत-उद्‌बोधन के लिए आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित माननीय पद्मश्री डॉ. अरुण त्रयम्बक दाबके जी के प्रति आभार सहित धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

विभिन्न विश्वविद्यालयों के माननीय कुलपति-गण, कुलसचिव, सम्मानित प्राचार्य-गण, अध्यापक-गणों का उपस्थिति हेतु धन्यवाद देता हूँ।

आमंत्रित उपस्थित सभी अभ्यागतों की गरिमामय उपस्थिति पर आभार व्यक्त करता हूँ। इलेक्ट्रॉनिक्स प्रिंट मीडिया, जिला प्रशासन, पुलिस प्रशासन के प्रति भी धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

अंत में मैं माननीय, कुलपति महोदय से अनुरोध करता हूँ, कि दीक्षांत-समारोह समापन की घोषणा करने की अनुमति प्रदान करें।

(ब)

कुलपति :

अनुमति है।

14. कुलसचिव द्वारा दीक्षान्त-समारोह समापन की घोषणा।

कुलसचिव :

मैं, डॉ. राजकुमार सचदेव, कुलसचिव, पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर माननीय कुलपति की आज्ञा से प्रथम दीक्षांत-समारोह के समापन की घोषणा करता हूँ।

15. समापन पर -

राष्ट्रगान

16. दीक्षांत शोभा-यात्रा का दीक्षांत-समारोह स्थल से प्रस्थान।